उपेक्षा के शिकार हैं गांवों के तालाब

हमारा पिछला अंक तालाबों पर केंद्रित था. उस अंक के दौरान हमने झारखंड मोबाइल रेडियो के जरिये गांव के लोगों से उनके गांव में तालाब और पोखरों की हालत पर कुछ सवाल पूछे थे. उन सवालों पर गांव से हमें बड़ी उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली. उन्हीं प्रतिक्रियाओं को हम यहां संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं...

ग्रामवाणी

ग्राम वाणी कम्युनिटी मीडिया द्वारा शुरू किया गया एक मीडिया चैनल है. आप इसमें अपनी समस्याओं के अलावा सामुदायिक सूचनाएं, किसी कार्यक्रम की जानकारी और सांस्कृतिक बातें भी छोड़ सकते हैं. आप कॉल करिए और खबरें दीजिये या दूसरों के द्वारा दी खबरें सुनिए. अब आप जब चाहें अपने द्वारा दी गयी खबर कभी भी सुन सकते हैं. हम आपकी बातों को राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित करेंगे. झारखण्ड मोबाइल रेडियो में आपके द्वारा दिया गया योगदान बहुमूल्य होगा.

ग्राम वाणी
www.gramvaani.org

अगली बहस के लिए सवाल

- क्या आपके गांव में ग्राम सभा नियमित होती है?
- ग्राम सभा कितने अंतराल पर होती है?
- क्या आप ग्राम सभा में भाग लेते हैं?
- अगर हां, तो वहां के कुछ अनुभव बतायें.
- अगर नहीं तो कारण बताएं.

वासुदेव तुरी

गांव- गुंजाडीह, **पंचायत**- गुंजाडीह
ब्लॉक - नवाडीह, **जिला** - बोकारो
हमारे गांव में दो तालाब और दो पोखर हैं. इसका पानी पीने योग्य नहीं है दोनों तालाबों में गंदगी है. बड़े तालाब की सफाई के लिये 14.50 लाख रुपये की राशि आवंटित की गयी थी. जिसमें से साढ़े चार लाख ही खर्च हुआ और शेष पैसे को वापस कर दिया गया. मनरेगा के तहत जितने भी तालाब बने उनमें पानी कम हैं. यह तालाब भी सूखने के कगार पर है.

उमेश कुमार तुरी

गांव - बाबुडीह, **ब्लॉक**- चन्दन क्यारी
जिला- बोकारो
बाबुडीह गांव में दो किलोमीटर के अंदर कुल 18-20 तालाब हैं, लेकिन पीने योग्य पानी किसी तालाब का नहीं हैं. पांच तालाब सूखने के कगार पर है. यहां के 6 तालाबों का निर्माण मनरेगा के तहत इस वर्ष हुआ है. पर यहां के लोग पीने के लिए चापाकल के पानी पर निर्भर हैं. शेष तालाबों की हालत जर्जर है.

सहदेव महतो

गांव -गोसे, **पंचायत**- सियारी,
ब्लॉक- गोमया

गोसे गांव में तीन तालाब हैं. इनमें से दो में सालों भर पानी रहता हैं. इन तालाब में मछली पालन भी होता हैं. दोनों तालाबों को सरकार की सहायता से व्यवसायिक रूप दिया जा सकता हैं. वहीं एक तालाब जो 3 एकड़ में फैला है जो मिट्टी से भरता जा रहा हैं. अगर इस तालाब की ओर ध्यान दिया जाए तो किसान इसकी सहायता से सिंचाई कर खेती में लाभ उठा सकते हैं. कुछ साल पहले यह तालाब मछलियों से भरा पड़ा था. अगर इसका गहरीकरण कर दिया जाए तो लोगों को लाभ मिलेगा. मनरेगा से लुकैया में एक तालाब का निर्माण किया गया है, इसमें आठ महीने पानी रहता है. अगर इसका और गहरीकरण कर दिया जाय तो सालों भर पानी रहेगा.

कैलाश गिरि

पंचायत- कान्ही, **जिला**-बोकारो
हमारे पंचायत में तीन तालाब हैं, जिसमें एक बड़ा और दो छोटा तालाब है. दो तालाब में सालो भर पानी रहता है. इन तालाबों में मछली पालन भी किया जाता है. मनरेगा के तहत कुछ और तालाब का निर्माण किया गया हैं. जिसमें पानी नहीं रहता हैं. इन तालाबों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है. हालांकि हमारे गांव में पीने के लिये तालाब के पानी का उपयोग नहीं किया जाता है. हमारे गांव में एक और तालाब मिट्टी से भर गया है. इसकी खुदाई करने की जरूरत है.

जेएस रंगीला

गांव- बुन्देडीह, **पंचायत**- बुन्देडीह
ब्लॉक- लोवाडीह, **जिला**- बोकारो
हमारे गांव 12 तालाब है, जिनमें 9 तालाब निजी हैं. इनका इस्तेमाल गांव के लोग करते हैं. यहां का पानी पीने योग्य नहीं है और न ही मछलीपालन व्यवसायिक रूप में होता है. अब ये तालाब भी मिट्टी भरने के कारण खतरे में हैं. पिछले पांच सालों में लौवादाही, गोधादाही, फुलवादाही और प्रबंधा में लाखों रुपये की लागत से चार तालाब बनाये गये हैं. लौवादीह के तालाब में पानी तो हैं पर शेष तीनों तालाब में पानी नहीं है. तालाब निर्माण की राशि का गलत उपयोग किया गया है. बुन्देडीह बड़ा तालाब तथा ब्राइल टाड स्थित तालाब का गहरीकरण किया गया पर यह भी अफसरों के बंदरबाट की भेंट चढ गया. अगर इन तालाबो पर विशेष ध्यान दिया जाए तो मछलीपालन के साथ सिंचाई के काम भी आ सकता है.

फरकेश्वर महतो

गांव- खेड़ागौरा, **पंचायत** - चेता
जिला- धनबाद
मेरे गांव में सरकारी तालाब का काम अभी अधूरा है. एक और तालाब है जिसमें मछलीपालन किया जाता है. गांव से आधे किलोमीटर की दूरी पर जामिया नदी है. हमारी समस्या थी कि नाले के पानी के साथ मिलकर नदी का पानी दामोदर नदी में चला जाता था. हमने आपसी सहयोग से जगह-जगह नाला को बांध कर पानी का ठहराव किया जिससे हमारे गांव में पानी का लेयर बढ़ गया है. हमलोग को अब पानी की समस्या नहीं रहती है.

पिंकू कुमार महतो

गांव- उदयपुर, **जिला** - धनबाद
हमारे गांव में दो तालाब है. तीन-चार पोखर भी है. एक बड़ा तालाब जो दो एकड़ में फैला हैं जो जीटी रोड के पास हैं. सड़क बनने के क्रम में तालाब में मिट्टी भर गया है. अब इस पर दलालों की नजर है. अब वे सड़क की मिट्टी से भरे क्षेत्र को बेचने की जुगत में हैं. अगर वे इसको बेचने में सफल हो गये तो लगभग 50 एकड़ कृषि योग्य भूमि की सिंचाई पर असर पड़ेगा.

खालिख अंसारी

वार्ड नंबर-2, **पंचायत** - चोड़ा
ब्लॉक-कुकरू, जिला-सरायकेला खरसावा
हमारे गांव में तीन सार्वजनिक तालाब है. किसी का भी पानी पीने योग्य नहीं है. इसलिये हमारे यहां चापानल से ही पानी पीने के उपयोग में लाया जाता है. मनरेगा के तहत कई तालाबों का निर्माण किया गया है. हमारे गांव के आसपास कोई ऐसा तालाब नहीं जो खत्म होने की हालत में हो.

जब्बार अंसारी

गांव- पेटरवार, **पंचायत**- सरनाकला
जिला- बोकारो
पेटरवार में तेनु घाट रोड पर तेना झील नाम का एक तालाब है. जहां छठ पूजा व अन्य पर्व मनाया जाता है. पिछले दस साल से इसकी साफ सफाई नहीं की गयी है. इसका पानी पूरी तरह प्रदूषित हो चुका है. यहां सिर्फ जानवर पानी पीते हैं. यह भी अब बंद होने के कगार पर है.

राजीव कुमार

ग्राम - नवादा, **ब्लॉक**: सिमरिया
जिला - चतरा
हमारे गांव में आधा दर्जन से ज्यादा तालाब हैं. सारे तालाब सरकारी योजना के सहयोग से बने हैं. दो-तीन को छोड़कर किसी में भी पानी नहीं रहता है. पिछले पांच साल में 6 तालाब बने हैं. पानी की कमी से मछली पालन भी नहीं हो पाता है. गर्मी तो दूर बरसात में भी पानी नहीं रहता है. पूरे जिले में पिछले पांच साल में जितने भी तालाब है जिसमें पानी नहीं रहता है.

जनार्दन महतो

प्रखंड- बाघमारा, **जिला**- धनबाद
मेरे गांव में पांच तालाब हैं. सभी सार्वजनिक तालाब है. इसमें किसी का पानी पीने लायक नहीं है. सारे तालाब भू-माफिया के कब्जे में हैं. उन्हीं के देखरेख में मछली पालन किया जाता है. पिछले दस साल में तालाब या पानी की समस्या को दूर करने का प्रयास नहीं किया गया. एक तालाब में मिट्टी भर गया है और उसमें झाड़ी भी उग आया है. हमें 3 किलोमीटर दूर से पानी लाना पडता है. दामोदर नदी का प्रदूषित पानी हमें पीना पड़ता है. आसपास के तालाबों पर भी कब्जा है.

सदाशिव चरण

पंचायत-तारनारी, ब्लॉक-सिलापुरा
जिला -बोकारो
हमारे पंचायत में एक बड़ा तालाब है. इस तालाब में पानी तो सालों भर रहता है पर इसकी सफाई नही हो पा रही है. इस तालाब में मिट्टी भरता जा रहा है. मनरेगा के तहत कई तालाबों-कुओं का निर्माण किया गया पर उनमें कोई न कोई कमी रह गयी. अगर इन तालाब की सही तरीके से रखरखाव की गयी और सही समय पर सफाई की गयी तो ग्रामीणों को लाभ मिल पायेगा.

दयानंद कुमार

गांव- धनेहडीह, **प्रखंड**- धनेडीह
जिला - गीरीडिह
मेरे गांव में एक तालाब है. यहां अन्य घरेलू कार्य किया जाता है. जिसमें मछलीपालन के लिये हमने कितनी बार प्रयास किया. तालाब में पानी ज्यादा समय तक नहीं रह पाता जिसके कारण हम असुविधा होती है. इस तालाब का मेढ़ कुछ वर्ष पूर्व टूट गया था. इसके बाद इसकी मरम्मत नहीं की गयी है. इस कारण से इस तालाब में पानी नहीं ठहर पाता है.

राधो राय

ग्राम : मोहदा, **पंचायत** : मोहदा
जिला : धनबाद

मनोज पारबुती

कांके, **जिला** : रांची
झारखंड में अधिकांश तालाब रैयती है. कम ही तालाब आम है. रैयती तालाब रैयती लोगों को दिया जाय. जो आम तालाब है उसके देखरेख के लिये समिति गठित करें. रैयत और आम तालाब को अलग-अलग रखा जाये. तालाब के जीर्णोद्धार के लिये काम हो.

कामदेव मिश्रा

ग्राम : मिसराडीह, **जिला** : गिरीडीह
हमारे यहां चार-पांच तालाब है. कोई तालाब सरकारी नहीं है. इसका जनता ही रखरखाव कर रही है. हालांकि मनरेगा से कुछ तालाब का मिट्टी कटाव किया गया है. इन तालाबों में मछली पालन के लिये डाक किया जाता है. बरसात के पानी से ही इन तालाबों में जल जमाव होता है. जलजमाव होने के बाद मछली पालन किया जाता है. दिसंबर-जनवरी तक पानी खत्म हो जाता है. इस बीच अगल-बगल की खेती हो जाती है.

अर्पणा मरांडी

पोस्ट- तिलगा, **ग्राम**-कारंडो
जिला- गिरिडिह
मेरे गांव में 6 तालाब हैं. इनमें से 3 तालाबों का काम अभी अधूरा है, जिस कारण से पानी कम रहता है. तीन तालाब में से दो सूख जाता है. सरकार को चाहिये कि पंचायत को इसके रखरखाव की जिम्मेदारी दे.

डा. आशीष

जिला - रामगढ
बरकाकाना में जोरा तालाब हैं जो सार्वजनिक है. ग्रामीणों को इस तालाब से कोई मतलब नहीं है. इसलिये कि यह सरकारी तालाब है. हमारे पंचायत में सरकारी तालाब नहीं है. दो बगल के गांव चिरागी गांव व मोहदावती में तालाब है. गांव की समिति इसकी देखरेख करते हैं. मछली से आमदनी को धार्मिक कार्य में लगाया जाता है. सरकारी योजना का पैसा इसमें नहीं लगता है. यहां का पानी पीने लायक नहीं है. पचास-पचपन वर्ष स्थापित कोल कंपनी का कचरा इसमें चला आता है. पानी पीने लायक नहीं है. एक गढ़हिया भी थी जिसका अतिक्रमण हो गया है.

पोष्टिकता में आलू का भी जवाब नहीं.100 ग्राम आलू में 16 ग्राम बढ़िया प्रोटीन, 18-22 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 0.1 ग्राम चिकनाई, 9.7 मिलीग्राम लोहा, 10 मिलीग्राम कैल्शियम और पर्याप्त मात्रा में विटामीन ''ए, बी, सी'' होते हैं.आलू तलने में उपयोग किए गए घी-तेल से भले ही मोटापा बढ़ता हो लेकिन भुना और उबला आलू व्यर्थ ही दोषी ठहराया जाता है.आलू में करीबन 80 प्रतिशत पानी और 20 प्रतिशत ठोस तत्व होते हैं.